दादी जी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया

– ब्रह्माकुमारी जानकी
मुख्य प्रशासिका, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

दादी प्रकाशमणि को मैं बचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरूआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता संपन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुँज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। बारी-बारी से सबकी भोजन बनाने की सेवा आती थी तो अपनी बारी में वे भोजन भी बहुत अच्छा बनाती थी। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बताए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैम्पल बनकर रही। वे सरलता और स्नेह की मूर्त बन मम्मा-बाबा तथा सर्व भाई-बहनों पर अपनापन उड़ेलती रही।

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थी।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प-बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी, उनका जहाँ-जहाँ कदम पड़ा, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी जी ने कानपुर, लखनऊ, पटना, मुम्बई आदि अनेक स्थानों पर अनेकानेक आत्माओं को प्यारे बाबा के वर्से का अधिकारी बनाया।

प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद, संगठन के किले को मजबूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ-परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएँ भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। लंदन तो सेवा का प्रमुख केन्द्र था ही। उन दिनों पूरे चार साल मैं मधुबन नहीं आई। हाँ, दादियाँ हमारे पास आती रहीं। सन् 1977 में दादी हमारे पास आई। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नेचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक

में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था।

यह मेरा महान भाग्य है कि ऐसी महान् दादी ने सदा ही मुझ पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परंतु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा। मधुबन मुख्यालय की ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए दादी स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहाँ-जहाँ उनके कदम पड़े, वहाँ-वहाँ ईश्वरीय सेवा के नये बीज अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गई।

जब दादी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था तब भी उनका मुस्कराता हुआ चेहरा देख, कर्मातीत स्थिति की प्रेरणा मिलती रही। चेहरे पर जरा भी दु:ख-चिन्ता की लहर नहीं दिखाई। जैसा बाबा हमें बनाना चाहता है, वो सबूत देखा। वे याद में भी लवलीन रहती थीं, बेहद सेवा को भी सामने रखती थीं और सर्व का सहयोग लेने की भी बड़ी सुन्दर युक्ति उनके कर्मों से देखने को मिलती थी। संक्षेप में यही कहूँगी कि बाबा की हर आज्ञा का पालन करते-करते दादी, बाप समान सबकी प्रेरणास्रोत बन गई।